ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 13 अंक - 0 6 जून - II, 2012 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.00 रु.

समाज निर्माण की आधारशिला है रचनात्मक सोच - भगोरा

डूंगरपुर। विश्व परिवर्तन की इस वेला में परमात्म अवतरण के और संस्था के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा वागड़ गांधी वाटिका में छः दिवसीय 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद ताराचन्द भगोरा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज् देश में ही नहीं अपितु विश्व में शांति और समृद्धि की सरिता प्रवाहित कर रहा है। संस्थान ने चरित्र निर्माण का जो बीड़ा उठाया है वह निकट भविष्य में विश्व में बंधुत्व और आदर्श मानव समाज के निर्माण का सपना साकार करेगा। उन्होंने कहा कि चरित्र की शिक्षा आज की प्राथमिक आवश्यकता है, इसके बिना समाज में श्रेष्ठ व गुणवान मनुष्य का निर्माण संभव नहीं है। उन्होंने अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज के माध्यम से श्रेष्ठ मानव के निर्माण और चरित्र के उत्थान का जो पूनीत कार्य हो रहा है वह सराहनीय है। जब तक हम सकारात्मक सोच के साथ विकास व 21 वीं सदी के युग को आत्मसात नहीं करेंगे। तब तक हम राष्ट्र निर्माण की परिकल्पना को पूरा नहीं कर सकेंगे। पूर्व केबिनेट मंत्री कनकमल कटारा ने कहा कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय लोकशांति की स्थापना के साथ परमात्मा द्वारा प्राप्त शिक्षा के माध्यम से आध्यात्मिक व मानवीय मूल्यों से युक्त दैवी समाज की पुनर्स्थापना का कार्य कर रहा है।

डूंगरपुर। दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद ताराचंद, संस्था की सह मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.मृत्युंजय, लखनऊ की ब्र.कु.राधा, ब्र.कु.विजयलक्ष्मी तथा अन्य।

संस्था की सह मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज मनुष्य स्वयं को ही भूल चुका है, अपने वास्तविक स्वरूप को विस्मृत कर मात्र भौतिक स्वरूप को देखता है। विश्व विद्यालय राजयोग की शिक्षा से विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहा है। इसके साथ ही पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिराने का भी कार्य कर रहा है। उन्होंने सभी धर्मावलम्बियों का आह्वान करते हुए कहा कि वे स्वर्णिम विश्व की नवरचना के लिए समर्पित भागीदारी से आगे आए और विश्व कल्याण का नया इतिहास बनायें। इस अवसर पर विभिन्न स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा दादी को 'स्मृति चिन्ह' देकर सम्मानित किया गया। अजमेर की जिलाधिकारी मंजू राजपाल स्वर्णिम भारत के उदय की स्थापना अवश्यंभावी बताते हुए कहा कि इसमें मानवीय, दैवीय मूल्यों मूल्यों को अपरिहार्य बताया। ब्र.कु.सूर्य ने कहा कि सेवा निःस्वार्थ भावना हो तो तथा चरित्र में दैवी गुणों की धारणा हो तथा परमात्मा की रचना इस सृष्टि के प्रति कल्याण की भावना हो तो सतयुग आने में देर नहीं लगेगी। समर्पण भाव से हुई सेवा ईश्वर आराधना का मार्ग प्रशस्त करती है।

लखनऊ की ब्र.कु.राधा ने 'आध्यात्मिक शिक्षा और जीवन मूल्य' विषय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की कैरियर आधारित शिक्षा के जाल में चरित्र पीछे छूट गया है। हमने डॉक्टर, इंजीनियर आदि तो बना दिए लेकिन चरित्र का निर्माण ईमानदारी से नहीं कर पाए। जीवन मूल्य आधारित बनने से ही मूल्यवान बनेगा। जागरण जन सेवा

(शेष भाग पृष्ठ 5 पर)

विश्व का सबसे पवित्र स्थान है मधुबन - साहिला चड्ढा

ज्ञानसरोवर। सच्चे दिल और अच्छे दिल से जीवन में आगे बढ़ने का मंत्र इस विद्यालय से प्राप्त हुआ है। यह विश्वास पक्का हुआ है कि इस आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के साथ अब जीवन में आगे बढ़ना है। मुझे यहाँ आकर संसार के सबसे पवित्र स्थान में होने की महसूसता हो रही है।

उक्त विचार फिल्म अभिनेत्री साहिला चड्ढा ने ब्रह्माकुमारीज कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हमें एक अच्छा हिन्दुस्तानी बनकर भेदभाव व आपसी लड़ाई छोड़कर प्यार से रहना चाहिए। ब्रह्माकुमारी बहनें जिस पवित्र भावना के साथ समाज के हित में इतने संगठित होकर इतना श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं वह सराहनीय है। वन गॉड वन फैमिली का संकल्प अवश्य पूरा होगा।

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए फिल्म अभिनेत्री साहिला चड्ढा, तथा मंचासीन हैं ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.मोहिनी, ब्र.कु.मुन्नी तथा अन्य।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री स्मिता जयकर ने कहा कि आध्यात्मिकता यह मर्म समझाती है कि जब तक आप स्वयं से प्यार नहीं करोगे, दूसरों से प्यार नहीं कर सकते। स्वयं को जो हूँ जैसा हूँ वैसा स्वीकार करनेवाला ही दूसरों को उसी के स्वरुप में स्वीकार कर सकता है। हम दूसरों को और ज्यादा कुछ ना दे सकें तो अवश्य मुस्कुराहट तो दे सकते हैं। हम सभी का जीवन ऐसी मक्खी की तरह है जो पानी के गिलास में गिर जाने पर इधर-उधर झटपटाती रहती है लेकिन ऊपर नहीं देख पाती जहां से वह निकल सकती है, उसी प्रकार हम इंसान भी जीवन भर इधर-उधर सुख के रास्ते खोजने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं लेकिन ऊपर की ओर नहीं देखते कि परमात्मा अपनी बाहें पसारे हमारी मदद के लिए खड़ा है। फिल्म निर्माता संजीव शर्मा ने कहा कि फिल्म बनाकर इस विद्यालय के आध्यात्मिक ज्ञान को लोगों तक पहुंचाऊंगा। सही निर्णय तभी कर सकते हैं जब हमारी सोच सकारात्मक हो।

कला एवं संस्कृति प्रभाग की संयोजिका ब्र.कु.कुसुम ने कहा कि यदि आपके अंदर कोई विशेषता या कोई ऐसी कला है तो इसे प्रभु द्वारा प्रदत्त उपहार समझकर इसे समाज के नव निर्माण में लगाना चाहिए। यह प्रभाग व्यक्ति के अंदर छुपी हुई कला को निखार लाने का कार्य करता है। जिससे मनुष्य अपने अंदर की कला को जानकर उसे श्रेष्ठ कार्यों में लगा सकता है। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि सच्ची कला वह है जो दुखी इंसान को खुशी व आनंद से संतुष्ट कर दे। कलाकार संवदेनशील दिल का होता है और अपनी कला से वह दूसरों को हंसा भी सकता है तो रूला भी सकता है। परम कलाकार परमात्मा ऐसी सृष्टि की रचना कर रहे हैं जो दिव्य गुणों से भरपूर होगी और दुख-अशांति से मुक्त होगी। कला से समाज में खुशहाली का वातावरण बने, ऐसा प्रयास कलाकारों को करना है।ज्यूरिस्ट विंग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने कलाकारों से सर्वोच्च कलाकार परमात्मा के स्वप्न को साकार करने में मददगार बनने का आह्वान किया।